पाठ - 11 **दिसम्बर 9-15**

चुने हुए

सब्त अपराह्न **दिसम्बर 9**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : रोमियो 10,11

याद वचनः *"इसलिये मैं कहता हूँ, क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया? कदापि नहीं, मैं भी तो इस्राएली हूँ: इब्राहीम के वंश और बिन्यामीन के गोत्र से हूँ"* (रोमियों 11:1)

इस सप्ताह का पाठ खास रूप से अध्याय 11 को प्रकाश में लेते हुए रोमियों 10 और 11 को समावेश करता है। पौलुस की सोच का पीछा करना जारी रखने के लिये इनकी संपूर्णता में दोनों अध्याय को पढ़ना महत्त्वपूर्ण है।

ये दो अध्याय विस्तृत चर्चा के केन्द्र बिन्दु रहे हैं। तथापि इन सबों के द्वारा एक स्पष्ट तर्क निकल आता है, और वह है मानवता के प्रति परमेश्वर का प्रेम और समस्त मानव को बचाये जाते देखने की उसकी महान लालसा। उद्धार के लिये किसी का सामूहिक इन्कार नहीं है। रोमियों 10 इसे बिलकुल स्पष्ट करता है कि "यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं" (रोमि० 10:12) - सब पापी हैं और सबको परमेश्वर के अनुग्रह की जरूरत है जैसा मसीह यीशु के द्वारा संसार को दिया गया है। यह अनुग्रह सबके पास आता है - राष्ट्रीयता के आधार पर नहीं, जन्म से नहीं, व्यवस्था के कामों के द्वारा नहीं वरन् , यीशु पर विश्वास के द्वारा जो सब पापियों के बदले मरा। भूमिकाएँ बदल सकती हैं, परन्तु उद्धार की मूल योजना कभी नहीं बदलेगी।

पौलुस अध्याय 11 में इस विषय को जारी रखता है। जैसा पहले व्याख्या की जा चुकी है, यह समझना यहाँ पर महत्त्वपूर्ण है कि जब पौलुस चुनाव और बुलावे के विषय बातें करता है यह विषय उद्धार का नहीं है, यह (विषय) परमेश्वर की योजना को संसार तक पहुँचाने की भूमिका है। कोई भी एक दल को उद्धार के लिये इन्कार नहीं किया गया है। वह कभी मुद्दा नहीं रहा। बल्कि क्रूस के बाद और सुसमाचार का अन्यजाति को परिचय कराना खास कर पौलुस के द्वारा, विश्वासियों का प्रारंभिक आन्दोलन - दोनों यहूदी और अन्य जाति को प्रचार करने का दायित्व ले लिया।

रविवार **दिसम्बर 10**

मसीह और व्यवस्था

पढ़ें : रोमियों 10:1-4। उस सभी को मन में रखते हुए जो पहले आया, यहाँ पर संवाद क्या है? आज हम कैसे "स्वयं की धार्मिकता" को स्थापित करने की चाहत के खतरे में हो सकते हैं?

विधिवाद अनेक रूपों में आ सकता है, कुछ अन्य से अधिक सूक्ष्म। जो स्वयं को देखते हैं, अपने अच्छे कर्मों को अपने आहार को, कितनी कड़ाई से सब्त पालन करते हैं, उन सब चीजों को जिन्हें वे नहीं करते, अथवा अच्छाईयों को जिन्हें उन्होंने हासिल किया है - इतना तक कि अच्छे ख्यालों के साथ - विधिवाद के फंदे में पड़ रहे हैं। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में, हमें हमारे सामने परमेश्वर की पवित्रता को हमारे पाप के खिलाफ लाना चाहिए; वह निश्चित तरीका है जो हमें उस प्रकार के सोच से बचाता है जो लोगों को "स्वयं की धार्मिकता" को ढूंढ़ने की ओर अग्रसरित करता है, जो परमेश्वर की धार्मिकता के विपरीत है।

रोमियों 10:4 एक महत्त्वपूर्ण पद है जो पौलुस का रोमियों को संपूर्ण संदेश के आशय को पकड़ लेता है। पहला, हमें प्रसंग को समझने की जरूरत है। बहुत से यहूदी

"अपनी धार्मिकता स्थापन करने का यत्न करके" (रोमि० 10:3) और कामना करते हुए "धार्मिकता जो व्यवस्था से है" (रोमि० 10:5) परन्तु मसीहा के आने के साथ, धार्मिकता का सच्चा रास्ता पेश किया गया । धार्मिकता सबको प्रदान की गयी जिन्होंने मसीह में अपने विश्वास को स्थिर किया। वही एक था जिसे प्राचीन विधि व्यवस्था संकेत करता था।

भले ही कोई यहाँ पर दस आज्ञाओं को व्यवस्था की परिभाषा में शामिल करें, इसका यह अर्थ नहीं कि दस आज्ञाएँ समाप्त कर दी गई थी। नैतिक व्यवस्था हमारे पापों को, हमारे दोषों को हमारी कमियों को संकेत करती है, और इस प्रकार हमें एक उद्धारकर्त्ता की हमारी जरूरत की ओर क्षमाप्राप्ति की हमारी जरूरत की ओर अग्रसरित करती है - जो सब कुछ केवल यीशु में पाया जाता है। इस मायने में, मसीह व्यवस्था का अंत है, जिसमें व्यवस्था हमें उस तक और उसकी धार्मिकता तक ले जाती है। अंत का यूनानी शब्द टेलोज (teloes) है, जो "लक्ष्य" या "उद्देश्य" के अर्थ में भी रूपांतरित हो सकता है।

मसीह व्यवस्था का अंतिम उद्देश्य है, जिसमें व्यवस्था हमें यीशु तक अगुवाई करता है।

इस पाठ को शिक्षा के तौर पर देखने के लिये दस आज्ञाएँ - या विशेष रूप से चौथी आज्ञा - यह निष्कर्ष निकालना कि अब प्रभावहीन हो गयी है और जो पौलुस नए में नियम जो सिखाता है के बिल्कुल विपरीत है ।

क्या आप स्वयं को अपनी अच्छाई के लिये कभी घमंड करते हुए पाते हैं, विशेष रूप से दूसरों की तुलना में? हो सकता है आप "बेहतर" हैं, पर ऐसा क्यों? स्वयं को मसीह से तुलना करें और तब सोचे वाकई में आप कितने अच्छे हैं।

सोमवार **दिसम्बर 11**

अनुग्रह का चुनाव

पढ़ें : रोमियों 11:1-7। कौन-सी सामान्य शिक्षा यह अनुच्छेद स्पष्ट एवं ठोस रूप से इन्कार करता है?

सवाल को अपने जवाब के प्रथम भाग में, "क्या परमेश्वर ने अपनी प्रजा को त्याग दिया?" पौलुस एक अवशेष को संकेत करता है, अनुग्रह का एक चुनाव, प्रमाण के तौर पर कि परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा है। यहूदी और अन्यजाति एक समान, उद्धार सबके लिये खुला है जो इसे स्वीकारते हैं।

यह याद किया जाना चाहिए कि मसीहियत में प्रारंभिक हृदय परिर्वतन वाले सब यहूदी थे - उदाहरणार्थ, वह दल जिन्होंने पेन्तिकोस्त के दिन हृदय परिवर्तन किया। पतरस को विश्वास दिलाने के लिये खास दर्शन और चमत्कार की जरूरत पड़ी कि मसीह के अनुग्रह को प्राप्त करने में अन्यजातियों की भी पहुँच बराबर थी (प्रेरित 10; को प्रेरित 15:7-9 से तुलना करें) और यह कि सुसमाचार उन तक भी वैसा ही पहुंचाया जाना था।

पढ़ें : रोमियों 11:7-10 क्या पौलुस कह रहा है कि परमेश्वर ने जानबूझकर इस्राएल की जनसंख्या के भाग को उद्धार से अंधा कर दिया जिसने यीशु का इन्कार किया? उस विचार में क्या गलत है?

रोमियों 11:8-10। में पौलुस पुराने नियम से उद्धृत करता है, जिसे यहूदियों ने आधिकारिक तौर पर ग्रहण किया। अनुच्छेद जिसका पौलुस हवाला देता है, सोने की एक आत्मा के तौर पर परमेश्वर को चित्रित करता है, यह उनके देखने और सुनने को रोक देता है। क्या परमेश्वर प्रकाश को देखने से उन्हें रोकने के लिये लोगों की आंखों को

अंधा कर देता है जो उन्हें उद्धार की ओर ले जाता है? कभी नहीं। यह अनुच्छेद रोमियों 9 के हमारे विश्लेषण के प्रकाश में समझा जाना चाहिए। पौलुस व्यक्तिगत उद्धार की बातें नहीं कर रहा है, क्योंकि परमेश्वर किसी एक दल को उद्धार के लिये इन्कार नहीं करता। मुद्दा यहाँ पर, जैसा यह हमेशा से रहा है, उस भूमिका से ताल-मेल करता है जो ये लोग उसके काम में भूमिका निभाते हैं।

इस विचार में क्या गलत है जो परमेश्वर ने उद्धार की समय सीमा में एक दल के लोगों को एक साथ इन्कार कर दिया है? क्यों सुसमाचार की संपूर्ण शिक्षा का यह विरोध करता है, जो मुख्य भाग में दिखाता है कि मसीह समस्त मानव जाति को बचाने के लिये मरा? उदाहरण स्वरूप, किस प्रकार यहूदियों के मामले में इस विचार ने दुखद परिणामों की ओर अग्रसरित किया है?

मंगलवार **दिसम्बर 12**

"स्वाभाविक शाखा'

पढ़ें : रोमियों 11:11-15। इस अनुच्छेद में पौलुस कौन-सी महान आशा को पेश कर रहा है?

इस अनुच्छेद में हम दो एक समान प्रस्तुतियों को पाते हैं : (1) "उनकी (इस्राएलियों की) प्रचुरता" (रोमि० 11:12) एवं (2) उनका (इस्राएलियों का) ग्रहण किया जाना (रोमि० 11:15) । पौलुस ने घटते हुए की कल्पना की है, और त्याग केवल अस्थायी था और संपूर्णता एवं स्वीकार इसका पीछा करना था। यह पौलुस का दूसरा जवाब उस सवाल के लिये था जो इस अध्याय के प्रारंभ में उठाया गया था, "क्या परमेश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया?" त्यागने-सा जो प्रकट होता है, वह कहता है केवल अस्थायी अवस्था है।

पढ़ें : रोमियों 11:16-24। यहाँ पर पौलुस हमें क्या कह रहा है? पौलुस इस्राएल में विश्वस्त अवशेष को श्रेष्ट जैतून पेड़ से तुलना करता है, जिसकी कुछ शाखाएं टूट चुकी है - एक दृष्टांत वह प्रमाणित करने के लिये प्रयुक्त करता है कि "परमेश्वर ने अपने लोगों को नहीं त्यागा है" (रोमि० 11:2) जड़ और तना अभी भी है।

इस वृक्ष में विश्वासी अन्यजाति आरोपित किये गये हैं। परन्तु वे जड़ और तने से उनके रस और प्राणशक्ति को खींच रहे हैं जो विश्वासी इस्राएल को प्रस्तुत करता है। जिन्होंने यीशु को इन्कार किया जैसा उनके साथ हुआ विश्वस्त अन्यजातियों के साथ भी हो सकता था। "एक बार बचाया गया हमेशा बचाया गया" का सिद्धांत बाइबल नहीं सिखलाती। जिस प्रकार उद्धार मुफ्त प्रदान किया जाता है, यह मुफ्त अस्वीकार किया जा सकता है। यद्यपि, हमें सोचने में सावधानी बरतनी चाहिए कि हर समय हम गिरते हैं हम उद्धार से बाहर हो जाते हैं, या हम बचाये नहीं जाते जबतक सिद्ध नहीं हो जाते, हमें विपरीत खाई से बचने की जरूरत है यह विचार कि एक बार परमेश्वर का अनुग्रह हमें ढंक लेता है, वहाँ पर हम कुछ नहीं कर सकते, कोई चुनाव हम नहीं कर सकते, जो उद्धार की व्यवस्था को हमसे छीन सके। अंत में केवल वे जो "उस में बने रहते हैं" (रोमि० 11:22) बचाये जाएंगे।

किसी विश्वासी को अपनी स्वयं की अच्छाई पर घमंड नहीं करना चाहिए अथवा अपने संगी-साथियों से स्वयं को बेहतर समझना चाहिए। हमारा उद्धार अर्जित किया हुआ नहीं था; यह एक उपहार था। क्रूस के सामने, परमेश्वर की पवित्रता के मानदंड के आगे हम सब बराबर हैं पापियों को ईश्वरीय अनुग्रह की जरूरत है जो अनुग्रह के द्वारा हमारा हो सकता है। हमारे पास कुछ नहीं जो हम स्वयं के लिये घमंड करें; हमारा घमंड केवल यीशु में होना चाहिए और इस संसार में आकर हमारे लिये जो कुछ भी किया मानव शरीर

में, हमारे दुखों को सहा, हमारे पापों के लिये मरा, हमें एक नमूना दिखाते हुए कि हमें कैसा जीवन जीना है, और हमें वह जीवन जीने के लिये सामर्थ्य देने की प्रतिज्ञा करता है। इन सब में हम पूर्णरूपेण उस पर निर्भर हैं, उसके बिना हमारे लिये कोई उम्मीद न होती, उस पार जो यह संसार स्वयं देता है।

बुधवार **दिसम्बर 13**

समग्र इस्राएल उद्धार पायेगा

पढ़ें : रोमियों 11:25-27। पौलुस कौन-सी बड़ी घटनाओं की भविष्यवाणी यहाँ पर कर रहा है?

मसीही सदियों से रोमियों 11:25-27 पर चर्चा एवं वाद-विवाद करते आ रहे हैं। तथापि कुछ बिन्दु स्पष्ट हैं। आरम्भक के लिये, संपूर्ण अभिप्राय यहाँ पर परमेश्वर का यहूदियों तक पहुँच बनाना है। जो पौलुस कह रहा है सवाल का जवाब आता है, जो अध्याय के प्रारंभ में खड़ा किया गया था, उसका जवाब "क्या परमेश्वर ने अपने लोगों को त्याग दिया?" निस्संदेह, नहीं है और उसका विश्लेषण (1) कि अंधापन केवल "भाग में है और (2) यह कि यह अस्थायी है, "जब तक अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें।"

"अन्यजातियां पूरी रीति से" का क्या अर्थ है? बहुत से इस वाक्यांश को सुसमाचार कार्य के पूरे अभिव्यक्ति के तौर पर देखते हैं, जिसमें सारा संसार सुसमाचार को सुनता है "अन्यजातियों की पूर्णता" आ गई है जब सुसमाचार सर्वत्र प्रचार किया गया है। इस्राएल का विश्वास जो मसीहा में स्पष्ट हुआ सर्वव्यापी हो गया है। सुसमाचार सारे संसार में प्रचार किया गया है, यीशु का आना नजदीक है। तब इस बिन्दु पर, बहुत से यहूदी यीशु के पास आना शुरू करते हैं।

दूसरा कठिन बिन्दु "सारा संसार उद्धार पाएगा" का अर्थ है (रोमि० 11:26) इसका यह अर्थ नहीं लगाया जाना चाहिए कि प्रत्येक यहूदी कुछ ईश्वरीय आदेश के द्वारा अंत के समय में उद्धार प्राप्त करता है। कहीं भी बाइबल सर्वव्यापकता नहीं सिखाती या समस्त मानवजाति के लिये अथवा एक खास हिस्से के लिये। पौलुस "उनमें से कुछ" को बचाने की उम्मीद कर रहा था (रोमि. 11:14) कुछ ने मसीहा को ग्रहण किया और कुछ ने अस्वीकार किया, जैसा कि यह सभी दल के लोगों के साथ होता है।

रोमियों 11 पर टिप्पणी करते हुए, एलेन जी० ह्वाईट एक समय की बात करती है "सुसमाचार के अंतिम उद्घोषणा में" जब "बहुत से यहूदी .... अपने उद्धारकर्त्ता के तौर पर मसीह को विश्वास के द्वारा ग्रहण करेंगे।" *द एक्ट्स ऑफ अपोसल्स, पेज 381* ।

"हमारे संसार में एक महान कार्य किया जाना है, प्रभु ने यह घोषणा कर दी है कि अन्यजाति इकट्ठे किये जायेंगे केवल अन्यजाति ही नहीं, वरन् यहूदी भी। यहूदियों में बहुत से हैं जिनका हृदय परिवर्तन होगा, और उनके द्वारा परमेश्वर के उद्धार को हम आगे बढ़ते हुए देखेंगे जो एक दीये की तरह जलता है। यहूदी हर जगह हैं और उन तक वर्तमान सत्य की ज्योति को पहुँचाया जाना है। उनमें से बहुतेरे हैं जो प्रकाश में आ जाएंगे, और वे अद्भुत सामर्थ्य के साथ परमेश्वर की व्यवस्था के अपरिवर्तनीयता का ऐलान करेंगे।" *एवेंजेलिज्म, पेज 578* ।

मसीही विश्वास के यहूदी जड़ों (मूलों) के विषय सोचने में कुछ समय लें। आप के मसीही विश्वास को बेहतर तरीके से समझने में यहूदी धर्म का चुनाव आपको कैसे मदद कर सकता है?

बृहस्पतिवार दिसम्बर 14

पापियों का उद्धार

पौलुस का अपने लोगों के प्रति प्रेम रोमियों 11:25-27 में साफ प्रकट होता है। सुसमाचार की सच्चाई और उसके विरूद्ध उसके कुछ देशवासियों की लड़ाई उसके लिये कितना कठोर रहा होगा। तथापि इन सबके बीच, वह अब भी विश्वास करता था कि बहुत सारे यीशु को मसीहा के तौर पर देखेंगे।

पढ़ें : रोमियों 11:28-36। पौलुस किस प्रकार, यहूदियों के लिये ही नहीं वरन समस्त मानवता के लिये परमेश्वर के प्रेम को दर्शाता है, परमेश्वर के अनुग्रह के चमत्कार एवं रहस्मय सामर्थ्य को पौलुस यहाँ पर किस प्रकार जाहिर करता है?

रोमियों 11:28-36 के द्वारा, यद्यपि यहूदियों और अन्यजातियों के बीच एक फर्क बनता है, एक बिन्दु साफ खड़ा होता है : पापियों के ऊपर परमेश्वर की दया और प्रेम और अनुग्रह उण्डेला जाता है। मानवता को बचाने के लिये और दूसरे लोगों को, राष्ट्रों को, व्यवहार करने के लिये, औजार के तौर पर उसके हाथ में उसकी ईश्वरीय इच्छा को पूरी करने के लिये परमेश्वर की योजना संसार की नींव से भी पूर्व थी।

सावधानीपूर्वक और प्रार्थना पूर्वक रोमियों 11:31 को पढ़ें। हमारी गवाही के विषय में इस पद से हमें कौन सा महत्त्वपूर्ण बिन्दु लेना चाहिए, यहूदियों के साथ ही नहीं परन्तु उन सभों के साथ जिनके संपर्क में हम आते हैं?

बेशक, सदियों तक, यदि मसीही कलीसिया यहूदियों से बेहतर बर्ताव करती, बहुत से उनके मसीहा के पास आते। मसीह के बाद प्रारंभिक सदियों में महान पतन और मसीहियत में चरम मूर्ति पूजा रविवार के पक्ष में सेवेंथ डे सब्त का इन्कार निश्चित रूप से एक यहूदी पर यह सहज प्रभाव नहीं हुआ जो यीशु की ओर खींचा जा सकता था।

कितना महत्त्वपूर्ण है तब कि सभी मसीही दया को महसूस करते हुए जो उन्हें यीशु में दिया गया है, वह दूसरों को दिखायें। हम ऐसा नहीं करते तो मसीही नहीं हो सकते (देखें मत्ती० 18:23-36)।

क्या कोई है जिससे आपको दया दिखाने की जरूरत है, संभवत: वह इसका हकदार नहीं है? क्यों नहीं इस व्यक्ति को वह दया दिखाइ जाये, कोई बात नहीं ऐसा करना कितना ही कठिन क्यों न हो? क्या वह नहीं जो यीशु ने हमारे लिये किया है?

शुक्रवार दिसम्बर 15

अतिरिक्त विचार : एलेन जी० ह्वाईट की किताब द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स में "बिफोर द सन्हेड्रिन," पेज 77-79; "फ्रोम परसक्यूटर टू डिसाईपल," पेज 112-114; "रिटर्न फ्रोम रोम," पेज 474, 475 को पढ़ें; एवेन्जेलिज्म में "रीचिंग कैथोलिक्स," पेज 573-577 पढ़ें; सेलेक्टेड मैसेजेस, बुक 1 में "वाट टू प्रीच एण्ड नॉट टू प्रीच," पेज 155, 156 पढ़ें।

"इस्राएल का एक राष्ट्र के तौर पर असफलता के बावजूद भी, उनमें अच्छाई के अवशेष रह गये हैं जिन्हें बचाया जाना चाहिए। उद्धारकर्त्ता के आगमन के समय विश्वस्त महिलाएँ एवं पुरुष थे जिन्होंने खुशी के साथ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के संवाद को ग्रहण किया था, और इस प्रकार नये सिरे से मसीहा से संबंधित भविष्यवाणियों को अध्ययन करने की ओर अग्रसारित हुए थे। जब प्रारंभिक मसीही कलीसिया का गठन हुआ, यह इन विश्वस्त यहूदियों द्वारा बना जिन्होंने नसरत के यीशु को उस एक तौर पर स्वीकार किया जिसके आगमन की वे आशा देख रहे थे।" - *एलेन जी० ह्वाईट, द एक्ट्स ऑफ द अपोसल्स, पेज 376, 377*

"यहूदियों में से कुछ है जो, जैसे तरशुश का शाउल, धर्मग्रन्थों में ताकतवर है,

और ये अद्‌भुत सामर्थ्य के साथ परमेश्वर की व्यवस्था के अपरिवर्तनीयता का ऐलान करेंगे ... उसके दासों के तौर पर विश्वास में उनके लिये परिश्रम करते हैं जो लम्बे अंतराल तक उपेक्षित और तिरस्कृत हैं; उसका उद्धार प्रकट किया जायेगा।" - *पेज 381*

"सुसमाचार के अंतिम ऐलान में, जब लोगों के समूहों के लिये खास काम किया जाना है जो अब तक उपेक्षित है, परमेश्वर अपने संदेशवाहकों से यहूदी लोगों में खास रुचि लेने की अपेक्षा करता है जिन्हें वे दुनिया के सभी भागों में पाते हैं। यहोवा के उद्देश्य के विश्लेषण में जैसा पुराना नियम और नया एक हो गये हैं यह बहुत से यहूदियों के लिये एक नई सृष्टि की सुबह के सामन होगा, यह आत्मा का पुनरुत्थान होगा। पुराने नियम के ग्रन्थों के पृष्ठों में जिस प्रकार सुसमाचार विधान का मसीह चित्रित हुआ हम देखते हैं, और महसूस करते हैं - कि कितनी स्पष्टता से नया नियम पुराने का विश्लेषण करता है, उसकी क्षमता को सक्रिय किया जायेगा और संसार के उद्धारकर्त्ता के तौर पर वे मसीह को पहचानेंगे। बहुत से लोग विश्वास के द्वारा मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता ग्रहण करेंगे।" - *पेज 381*

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न :

- जैसा कि परमेश्वर की व्यवस्था, खासकर सब्त, अंतिम दिनों में स्पष्ट केन्द्र बिन्दु के रूप में आता है, यह सोचना विचारशील नहीं है कि यहूदी - उनमें से बहुत कोई दस आज्ञाओं के विषय वैसा ही गंभीर है जैसा ऐडवेंटिस्ट हैं - क्या उनकी भूमिका कुछ मुद्दों को संसार के सामने स्पष्ट करने में मददगार होगी? आखिरकार जब यह सब्त मानने की बात आती है, यहूदियों की तुलना में ऐडवेंटिस्ट लोग "भवन में नये मेमने हैं।" व्याख्या करें।
- समस्त कलीसियाओं में, ऐडवेंटिस्ट कलीसिया को यहूदियों तक पहुँच बनाने में क्यों अधिक सफल होना चाहिए? आपके समुदाय में यहूदियों तक पहुँच बनाने के लिये आप या आपकी स्थानीय कलीसिया क्या कर सकती है?
- प्राचीन इस्राएल में बहुतों की गलतियों से हम क्या सीख सकते हैं? उन्हीं चीजों को आज करने से हम कैसे बच सकते हैं?